नाम — डॉ॰ मोती लाल शाकार

महाविद्यालय का नाम - दुर्ग महाविद्यालय

संकाय — कला

पदनाम — सहायक प्राध्यापक

विषय — 'भाषाविज्ञान'

शीर्षक — 'कोश निर्माण पद्धति एवं प्रकार'

कोश निर्माण पद्धति एवं प्रकार

डॉ. मोती लाल शाकार
सहायक प्राध्यापक
दुर्ग महाविद्यालय, रायपुर

कोश निर्माण पद्धति

कोश विज्ञान के अंतर्गत कोशों के इतिहास, प्रकार निर्माण पद्धति, सुधार उन सामान्य सिद्धांतों का विवेचन और निर्धारण होता है जिनके आधार पर उत्कृष्ट कोटि के कोश बनाए जाते हैं —

संस्कृत में 'कोश' शब्द का सर्व प्रथम प्रयोग भागुरि के 'त्रिकाण्ड कोश' में मिलता है जिसका रचना काल पहली शती ई० अनुमानित किया जाता है।

कोश एवं शब्द का संबंध शरीर और आत्मा का-सा है शब्द के जन्म विकास परिवर्तन तथा परिवर्धन के साथ ही कोश के मूलभूत उपादान एवं सामान्य लक्षण विषयक धारणाएँ भी समय की अवधि के साथ-साथ परिवर्तित होती चलती है। कोश में शब्द-संग्रह ही नहीं उसका सम्यक् वर्ण-विन्यास, अर्थ प्रयोग, उच्चारण पर्याय आदि का भी देना आवश्यक माना गया है।

कोश शब्द अँग्रेजी के डिक्शनरी (Dictionary) का समानार्थी है। यह शब्द लैटिन के 'diction' या 'dictio' से निकला है, जिसका अर्थ है 'शब्द' या 'उच्चारण'। अँग्रेजी में 'डिक्शनरी' शब्द का प्रयोग ऐसे शब्द कोश के लिए होता है जिसमें शब्दों का क्रम आक्षरादि हो, जिसमें शब्दों का उच्चारण, उनकी निरुक्ति और व्याकृतियाँ, उनके विभिन्न अभिप्राय या अर्थ, उनकी वर्तनी, पर्याय, और विपर्याय उनके संबंध रखने वाले शब्दों के प्रयोग भी दिए हों।

पद्धति— शब्द संकलन, वर्तनी, शब्द निर्णय, शब्द क्रम, व्याकरण

कोशों के प्रकार —

1. शब्द कोश —

2. ज्ञान कोश —

शब्द संकलन —

सबसे पहला काम कोशकार को शब्द संकलन करना पड़ता है। कोश यदि जीवित भाषा का है तो लोगों से सुनकर शब्द इकट्ठे करने पड़ते हैं। यदि साहित्य या पुरानी भाषा का बनाना हो तो पुस्तकों से लेना पड़ता है क्योंकि हर जीवित भाषा से शब्द बढ़ते रहते हैं।

वर्तनी —

सबसे अधिक आवश्यक है वर्तनी की एकरूपता। अनेक रूपता होने पर होता यह है कि कभी-कभी शब्द-कोश में रहता तो है किंतु मिलता नहीं।

शब्द निर्णय —

यह कार्य बहुत कठिन है। इसमें कई प्रश्न सामने आते हैं जैसे कि शब्द को मूल माने और किसको दूसरे के अंतर्गत रखें। समस्त पदों को प्रथम के साथ रखें या दूसरे के। इसी प्रकार से ध्वनि की दृष्टि से एक दीखने वाले शब्द को एक माने या अधिक। उदाहरणार्थ — 'आम' शब्द है एक तो अरबी का जो खास न हो दूसरे संस्कृत में 'आम्र' का तद्भव। अच्छे कोश में दोनों को अलग शब्द मानना होगा।

शब्द क्रम —

कोश में शब्द विशेष क्रम से होते हैं ताकि देखने वाले उन्हें सरलता से पा सकें। संसार में कोशों में अनेक प्रकार के शब्द-क्रम प्रचलित रहे हैं।

व्याकरण —

कभी कभी एक शब्द कई व्याकरणिक इकाई के रूप में प्रयुक्त होता है। मूलतः वह जो है, उसी का कोश में उल्लेख होना चाहिए।

शब्द कोश —

शब्द कोश से तात्पर्य उस कोश से है, जिसमें शब्द, पद, उपवाक्य तथा वाक्य आदि का संचालन हो। यह संकलन दो प्रकार का हो सकता है - अर्थवान तथा अर्थहीन।

(अ) अर्थयुक्त —

अर्थ की दृष्टि से दो प्रकार के होते हैं — अनेकार्थी तथा समानार्थी। समानार्थी कोश दो प्रकार के होते हैं —
1. पर्याय कोश 2. पर्याय-विपर्याय कोश.
पर्याय से तात्पर्य मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्दों से है।
पर्याय-विपर्याय कोश में मुख्य शब्द का विपरीतार्थक शब्द भी साथ में दिया जाता है।

अनेकार्थी कोश —

प्रत्येक शब्द के कई अर्थ होते है और अधिकांश कोश इसी प्रकार के हैं, वे कोश कई प्रकार के हो सकते हैं —

एक भाषी कोश —

इस प्रकार के कोश में किसी भाषा का अर्थ उसी भाषा में दिया जाता है जैसे - अँगरेजी - अँगरेजी कोश हिंदी - हिंदी कोश।

वर्णनात्मक कोश —

इसमें किसी भाषा में किसी एक काल में प्रयुक्त सारे शब्दों और उनके सारे अर्थों को देते है। यदि एक शब्द के एक से अधिक अर्थ है, तो उन्हें किस क्रम में रखा जाए। हिंदी में नागरी प्रचारिणी सभा का हिंदी शब्दसागर या उसका संक्षिप्त रूप मानक हिंदी कोश या प्रामाणिक हिंदी कोश इसी प्रकार के वर्णनात्मक कोश है।

ऐतिहासिक कोश —

किसी भाषा का ऐतिहासिक कोश उसके विकास आदि को समझने के लिए बड़ा सहायक होता है।

ऐतिहासिक कोश में किसी भाषा में केवल प्रचलित शब्दों या उनके प्रचलित अर्थों को ही न लेकर सारे शब्दों और उनके सारे अर्थों को लिया जाता है।

व्याख्यात्मक कोश —

इसमें शब्दों के व्याख्यात्मक अर्थ दिए जाते हैं, जिसमें अर्थ प्रायः स्पष्ट रहे अँगरेजी वेब्स्टर कोश इसी प्रकार का है। हिंदी के मानक कोश में कुछ शब्दों के व्याख्यात्मक अर्थ देने का प्रयास किया गया है। पर्यायिकी भी इसी प्रकार का कोश है इसमें पर्यायवाची शब्दों को एक साथ देकर, प्रत्येक के अर्थगत अंतर को व्याख्यात्मक रूप में स्पष्ट किया जाता है।

द्विभाषिक कोश —

इसमें एक भाषा का अर्थ दूसरी भाषा में दिया जाता है जैसे — उर्दू-हिंदी कोश, अँग्रेजी-हिंदी कोश।

बहुभाषी या तुलनात्मक कोश —

ये दो या अधिक भाषाओं के कोश तुलनात्मक तथा ऐतिहासिक हो सकते हैं। इसमें एक ही अर्थ के वाचक अनेक भाषाओं के शब्द संकलित किए जाते हैं ऐसे कोशों का प्रमुख उद्देश्य यह होता है कि एक स्थान पर एक अर्थ के वाचक अधिक से अधिक भाषाओं के शब्द एक साथ देखे जा सके तथा उन्हें प्राप्त ध्वन्यात्मक अर्थ संबंधी समानता आदि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सके।

बोली कोश —

बोलियाँ जन सामान्य के दैनिक और सामाजिक जीवन को व्यक्त करने का माध्यम होती है। इन कोशों में वे शब्द संकलित किए जाते हैं जो मानक प्रयोगों से भिन्न माने जाते हैं। इन शब्दों के स्थानीय एवं आवश्यकता अनुसार चित्र सहित भी दिए जाते हैं। अमानक होने के कारण शब्दों के रूप निश्चित करने में यथार्थ ध्वन्यात्मक रूप मान्य समझा जाता है।

ज्ञान कोश —

ज्ञान कोश सामान्य और विशेष दो कोटियों के हो सकते हैं

सामान्य ज्ञान कोश या विश्वकोश —

इसमें विषयों का चयन सभी क्षेत्रों से करते हैं और पठनीय सामग्री का स्तर पाठक की दृष्टि से उच्चतम से लेकर साधारण तक हो सकता है। बच्चों के लिए लिखे गए विश्व कोशों की सामग्री उच्च स्तर की होती है जिसमें बच्चों को लाभ हो सके। विशेषज्ञों के लिए जो विश्वकोश उनके लेखों में ज्ञान के स्तर से परिचित कराने का प्रयत्न किया जाता है।

विशेष ज्ञान कोश —

ये कोश दो कोटियों में विभाजित किए जा सकते हैं —

1. परिभाषित ज्ञान कोश —

इन कोशों में ऐसे शब्दों का संग्रह करते हैं जो कुछ विशेष मानवीय गतिविधि के कुछ विशेष रूप के ज्ञान की शाखा का अध्ययन करने वालों के लिए विशेष अर्थ और महत्व रखते हैं

2. विशिष्ट कोश —

इसके अंतर्गत विशेष कोशों को रखा गया है —

चरित्र कोश —

इसमें पौराणिक तथा ऐतिहासिक चरितों का संकलन किया जाता है।

कथा कोश —

प्राचीन साहित्य में व्यवहृत नामों तथा पौराणिक कथाओं का संदर्भ ग्रंथ जैसे - हिंदी कथा कोश को लिया जाता है।

शासक कोश —

देश में शासक रहे राजाओं का विवरण देते हैं।

इस प्रकार कोश के उपर्युक्त वर्गीकरण हो सकते हैं।